M.A - CC3 Sem-I

M.A Pre. III Paper

छेदसूत्र साहित्य पर प्रकाश डालें।

छेदसूत्र जैन आगम का प्राचीन भाग है। इन सूत्रों में निर्ग्रन्थ
और निर्ग्रन्थिनियों की प्रायश्चित विधि का प्रतिपादन किया गया है जीवन के
दैनिक व्यवहार में सावधान रहने पर भी दोष का होना स्वभाविक है। अतः
उन लगे हुए दोषों का पश्चाताप द्वारा परिमार्जन करना ही प्रायश्चित है।
छेद सूत्रों को उत्तम श्रुत कहा जाता है। छेद सूत्रों की संख्या छः है।

① निसीह (निशीथ) छेद सूत्रों में निशीथ का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान
है। इसे आचारांग सूत्र की दूसरी चूला के रूप में माना जाता है।
इसका दूसरा नाम आचार कल्प भी है। साधु एवं साध्वियों के आचार
विचार सम्बन्धी नियमों का निरूपण है तथा इन नियमों के उत्सर्ग एवं
अपवाद मार्ग भी वर्णित है। यह 20 उद्देशों में विभक्त है। प्रथम उद्देश में
ब्रह्मचर्य के पालन करने के नियमों का वर्णन है। दूसरे उद्देश में
भिक्षुओं को जूता पहनने तथा बहुमूल्य वस्त्र धारण करना भी वर्जित है।
तीसरा उद्देश में भिक्षावृत्ति की विधि का निरूपण किया गया है। इसप्रकार
प्रत्येक उद्देश में साधुओं को अतिरिक्त संसाधन का निषेध किया गया
है। इसके साथ ही इसमें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और भाषा
सम्बन्धी सामग्री का प्राचुर्य है। इसमें अहिंसा आदि व्रतों का भी
अच्छा निरूपण है।

② महानिसीह (महानिशीथ) इस छेदसूत्र को समस्त प्रवचन का सार कहा
गया है। इस ग्रंथ में छः अध्ययन और दो चूला है। प्रथम और द्वितीय
अध्ययन में पाप कर्मों की निन्दा और आलोचना की गई है। तृतीय और
चतुर्थ अध्ययन में साधुओं को कुशील साधुओं के सम्पर्क से बचने
का उपदेश दिया गया है। इसमें नवकारमंत्र, दया और अनुकम्पा
आदि का भी विवेचन है। पंचम अध्ययन में गुरु-शिष्य के सम्बन्ध व
निरूपण किया गया है। छठे अध्ययन में प्रायश्चित और आलोचना के
के चार भेदों का वर्णन है। इसमें गच्छों का वर्णन सुन्दर है जो जैन
संघ के इतिहास की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। चूलाओं में भी
कई कथाएँ आयी है। इन कथाओं में सती होने तथा विधवा राजकुमारी
को गद्दी पर बैठने का निरूपण है।

③ ववहार (व्यवहार) इस ग्रंथ के कर्त्ता श्रुतकेवली भद्रबाहु को माना
गया है। इस सूत्र पर भाष्य और नियुक्ति भी है इस ग्रंथ में 10

Scanned with CamScanner

या अज्ञानता से अपराध हो जाने पर भी आलोचना करनी चाहिए तथा प्रायश्चित भी। अन्य उद्देशक में भी विभिन्न स्थितियों में आलोचना, गर्हा और निन्दा के साथ प्रायश्चित ग्रहण करने का विधान किया गया है। इसमें साधु साध्वियों के खान-पान, व्यवहार आदि के नियम बताये गये है। आचार्य के अनुशासन में शिष्यों को रहना अत्यावश्यक है। इस सूत्र में चार प्रकार के आचार्य, चार प्रकार के अन्तेवासी एवं तीन प्रकार के स्थविरो का उल्लेख किया गया है। इसमें स्वाध्याय पर विशेष जोर दिया गया है पर अस्वाध्याय काल में स्वाध्याय करने का निषेध किया गया है। अनध्याय काल का भी विवेचन है। दस प्रकार के वैयावृत्यों का विवेचन है। साध्वियों के निवास, अध्ययन, चर्या, उपधान आदि सम्बन्धी विस्तृत नियमों का निरूपण किया गया है।

(4) दसासुयक्खंध (दशाश्रुतस्कन्ध) इस छेद सूत्र के रचयिता आचार्य भद्रबाहु माने गये हैं। इस ग्रंथ का दूसरा नाम आचारदशा है। इसमें दस अध्ययन हैं। जिसमें आठवें और दसवें विभाग को अध्ययन और शेष विभागों को दशा कहा गया है। इस ग्रंथ के आरम्भ में हस्तकर्म, मैथुन, रात्रि भोजन, राजपिण्ड ग्रहण के आलोचना प्रायश्चित लिखे गये है। चौथी दशा में आचार सम्पदा, श्रुतसम्पदा, शरीर सम्पदा, संग्रह सम्पदा का कथन है। आठ सम्पदाओं का विस्तृत विवेचन किया गया है। आठवें अध्ययन में भगवान महावीर के जीवन-चरित वर्णित है। महावीर के चरित के साथ पार्श्व, नेमि और ऋषभ देव के चरितों की संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत की गयी है। मोहनीय कर्मबन्ध के तीस स्थानों का निरूपण है।

(5) कप्प (कल्प) - जैन श्रमणों के प्राचीनतम आचार-शास्त्र का निरूपण इस ग्रंथ में किया गया है। इसमें छः उद्देशक हैं। इस में भी साधु-साध्वियों के संयम के साधक एवं बाधक स्थान वस्त्र, पात्र आदि का विवेचन किया गया है। इस छेदसूत्र के रचयिता भद्रबाहु स्वामी ही माने जाते हैं। प्रथम उद्देशक में निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थिनियों के निवास का विस्तृत वर्णन है। दूसरे उद्देशक में भी निवास और विहार के नियम ही प्रतिपादित हैं। तीसरे उद्देशक में निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थिनियों को एक दूसरे के उपाश्रय में आने-जाने की मर्यादा का उल्लेख किया गया है। चौथे उद्देशक में प्रायश्चित और आचार विधि का निरूपण है।

(6) पंचकल्प → इस ग्रंथ में भी साधु एवं साध्वियों के रहने विहार करने एवं आहार ग्रहण करने के नियम वर्णित हैं। इसमें प्रायश्चित और आलोचना विधि का निरूपण भी किया गया है।